डोली शाह

हैलाकांदी, असम

सच का आईना

सुरेश आफिस से घर पहुंचा ही था कि पत्नी पास आकर बोली- मुंशी ने आपसे कुछ चर्चा करने के लिए आपको बुलाया है,

-- किस चीज का चर्चा, कुछ बताया क्या!!

--नहीं,

इतना कहकर वह चाय बनाने चली गयी ,वापस चाय लेकर आयी तो देखा ,सुरेश कुछ ध्यान मग्न था,उसके सामने रखते हुए बोली-क्या सोच रहे हो,चाय पीकर फरेस होकर उनके यहा चले जाओ ,अपने आप पता चल जायेगा,क्या बात है,

-- ठीक है,कहकर सुरेश चाय पीने लगा,चाय समाप्त कर फरेस होने चला गया,फिर वहा से कपडे बदल कर मुंशी जी के वहाँ गया,वहा देखा कि उनके यहाँ पहले से ही कुछ लोग बैठे है,सभी को देख सुरेश बोला -मुंशी जी ऐसी क्या चर्चा करने थी जो आपने हमे बुलावा भेजा धा,

--उसकी बातो के उत्तर मे मुंशी ने अपनी सफाई पेश करते हुए सारी बात बताई। अब तुम ही बताओमैंने थोड़ी सी मालिश करने को क्या कहा उसकी मां ने तो बात का बतंगड़ बना दिया! कहती है कचहरी जाएगी ! बड़ी मुश्किल से तो मानी है चर्चा के लिए !

मुंशी की बात सुनकर भी सुरेश मौन हो सब कुछ सुनता रहा। इतने में बच्ची की मां प्रतिरोध कर कहने लगी। मैने अपनी बच्ची के पेट पालने के लिए आपके कामों में हाथ बटाने के लिए भेजा था ना कि आप लोगों की मनमानी करने के लिए ...हम गरीब जरूर है लेकिन बिकाऊ नहीं ! और न जाने क्या-क्या बोलती रही। यदि आप लोग मेरी बेटी के साथ न्याय नहीं कर पाएंगे तो मैं थाने, कचहरी जाऊंगी ।

--- बच्ची की मां की बात सुन कर भी सुरेश ने कोई प्रतिक्रिया नही दिया पर अन्य वहीं बैठे सज्जन कहने लगे थाने वाने जाने की जरूरत नहीं , हम हैं ना तुम्हारे हितैषी, बोलो तुम्हें क्या न्याय चाहिए? अरे यह भी तो सोचो, कहां मुंशी जी पिता की उम्र के हैं ,और बच्ची मात्र 12 साल की...खैर ,छोड़ो यह सब बात , बताओ तुम्हें कैसा न्याय चाहिए?

-- मुंशी जी के शुभचिंतक बोलते रहे पर मां मौन ही थी तभी एक शुभचिंतक बोले --भूल जाओ कुछ हुआ ही था।फिर मुंशी जी की ओर मुखातिब होकर बोले-- मुंशी जी कुछ दे दीजिए बीटिया को !इससे इसकी मा को कुछ मदद हो जायेगी,

शुभचिंतक की सलाह पर मुंशी जी अदर से पचास हजार लाये और निकाल कर आगे किए ही थे कि सुरेश आवाक हो गये ,मुख से कुछ कहते कि इसके पहले ही बगल में बैठे एक सज्जन ने सलाह दी कि सुरेश अभी मौन ही रहना उचित है बेफिजूल की दुश्मनी इनसे लेकर कोई फायदा नहीं, --पर बच्ची की मां मुंशी जी के शुभचिंतक का प्रस्ताव अस्वीकार

कर आग बबूला हो वहां से पुलिस थाने की ओर निकल पड़ी।

इतने में सभी चाटुकार शुभचिंतक मुंशी को तसल्ली की बोल समझाते हुए अपने घर को निकल पड़े।

सुरेश भी घर आ गए लेकिन उनके मन- मस्तिष्क से मानो वह दृश्य ओझल ही नहीं हो रहा था। चूंकि वह एक संवाददाता भी थे ।उसके गले से यह बात बर्दाश्त नहीं हो रही थीं। घर जाकर ही वह अपने अखबार के फ्रंट पेज पर *सच का आईना शीर्षक इस समाचार को लगाया ।

-----अगले दिन लोगों के हाथों में अखबार देख मुंशी जी के पैरों तले जमीन खिसक गये। वह फौरन अपने चिटुकार शुभचिंतकों के साथ सुरेश के घर पहुंचे। ओर उसे धमकाते हुए कहा --अरे सुरेश ,तुमको यह खबर अखबार में लगाने की क्या जरूरत थी?

--- मुंशी जी बात सुन सुरेश अपने पत्रकारिता रूप मे आकर बोला--हम क्या किया,हमने तो केवल अपने पत्रकारिता धर्म का पालन किया,बह भले मेरी बेटी नही है,पर किसी की तो बेटी है,, यह ख़बर उन हजार लड़कियों की इज्जत बचाने के लिए ,उन्हें सुरक्षित करने के लिए सबके सामने लाना आवश्यक था।

आप एक बार सोच कर देखिए, क्या यह सही न्याय हुआ? क्या सिर्फ पचास हज़ार देकर एक बेटी की इज्जत के साथ खेला जा सकता है कोई, इसलिए कि वह गरीब परिवार की है उसने इतने पैसे देखे नहीं कभी!! क्या वह अमीर या पढ़े-लिखे खानदान की बेटी होती तो भी यही सही होता..... नहीं ना! लेकिन इज्जत तो दोनों का समान है । बिन फूल खिले फूलों को तो एक माली भी तोड़ने की इजाजत नहीं देता फिर "वह तो एक फूल जैसी बच्ची है " !मैं नहीं चाहता कि ऐसी घटना दोबारा हमारी कॉलोनी में हो, मैं और दस दरिंदों को बढ़ावा नहीं देना चाहता ।बेटी तो बेटी होती है ,चाहे वह एक गरीब की हो या अमीर की ! वह भारत की बेटी है। कुछ तो तो मुंडी हिलाए और कुछ निकलते हुए बोले --चलिए उठिए," सांप के सामने बीन बजाने से कोई फायदा नहीं"।

हां- हां मैं सांप हूं और आप लोग बिन.. सबके मायूस चेहरे को देख सुरेश भी कुछ गंभीर हो ग्ए।

इतनी में श्रीमती आकर कहने लगी।क्या जरूरत थी आपको यह खबर छाप कर सभी को दुश्मन बनाने का!

सुनैना तुम भी, एक लड़की होकर !

मैं सब कुछ समझ रही हूं। उनकी गंदी हरकतों को भी लेकिन

क्या लेकिन...क्या उसकी जगह आपकी बहन या बेटी होती तो आप मान लेती।

नहीं तो, मगर...

कुछ मगर नहीं बस आप एक नारी हो और एक संवाददाता की पत्नी। सच का साथ देना आपका भी कर्तव्य बनता है।

हां जी

सत्यमेव जयते".